F-11

D.El.Ed 1st year

MUSIC

मात्रा

* तानों में उनकी लम्बाई स्पष्ट करने वाली इकाई को मात्रा कहते है। मात्रा ताल का ही एक हिस्सा है क्योंकि मात्राओं के योग से ही समस्त तालो की रचना हुई है। एक-सी लय या चाल में गिनती गिनने को मात्रा कह सकते है

सम

यह ताल का वह स्थान है, जहाँ से गाना-बजाना या ताल का ठेका शुरु होता है। गायक-वादक ऐसे स्थान पर संगीत करते हुए जब मिलते है, तो एक विशेष प्रकार की आनन्द आता है। 'सम' पर गायक-वादक विशेष जोर देकर उसे प्रदर्शित करते है। प्रायः सम पर ही गाने बजाने की समाप्ति भी होती है। सम को न्यास कहते है

आवृत्ति

आवृत्ति का अर्थ है — दुहराना, फेरना। कोई ताल एक बार 'सम' की जगह से प्रारम्भ करके घूम-फिर कर सम पर आ जाए, तो उसे एक आवृत्ति कहेंगे।

आलाप

आलाप में गीत के शब्दो की ~~सहा~~ सहायता के बिना आकार आ, ई, ऊ, त, ना, तो, नो इत्यादि से राग का प्रदर्शन करते है। रागों के आलापों में राग का मेल या ठाठ तथा बाकी संवादी स्वरों को पूरा दर्शन होना चाहिए। गीत प्रारम्भ करने के पहले रागालाप करने की प्रथा है। इसमें ताल तथा शब्दों की आवश्यकता नही होती। आलाप उन गायकों के लिए बहुत ही मनोहर होते हैं, जिनके कंठ मँजे हुए और मधुर होते है तथा जिनका स्वर ज्ञान व राग ज्ञान उत्तम होता है। आलाप-गान करने वाले गायक अधिकतर ध्रुवपदिए ही होते है।

Scanned with CamScanner